By :- Suweta Kumari
Dept. of History
J.N.C. Madhubani

विदेशी नीति से क्या अभिप्राय है? भारत के विदेश नीति के मूलभूत सिद्धांतों का विवेचन

(What do you mean by foreign policy? Describe its main principle)

विदेश नीति :- (Foreign policy) साधारण शब्दों में विदेशनीति से तात्पर्य उस नीति से है जो एक राज्य द्वारा दूसरे राज्यों के प्रति अपनाई जाती है। वर्तमान युग में कोई भी स्वतंत्र देश संसार के अन्य देशों से अलग नहीं रह सकता उसे राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जरूरतों को पूरा करने के लिए एक दूसरे पर रहना रहना पड़ता है। इस संबंध को स्थापित करने के लिए वह जिन नीतियों का प्रयोग करता है उस नीतियों को उस राज्य की विदेश नीति कहते हैं।

भारत की विदेश नीति की प्रमुख विशेषतायें :-

स्वतंत्र भारत की सरकार ने अपने राष्ट्र हितों को ध्यान में रखकर विश्व के देशों के साथ नए ढंग से संबंध स्थापित करने का प्रयास किया। स्वतंत्रता के पश्चात से अब तक भारत ने जो विदेश नीति अपनायी उसके प्रमुख लक्षणों की विवेचना निम्नलिखित शीर्षकों से की जा सकती है :-

1. विश्वशांति में आस्था :- भारत की विदेशनीति का सिद्धांत है, विश्व में शांति की स्थापना में सहयोग देना। विदेशनीति में इस सिद्धांत को महत्व देने का प्रमुख कारण है :- प्रथम यह भारत की अत्यंत महान तथा प्राचीन परम्परा है। द्वितीय वर्तमान युग में भीषण युद्ध सामग्री का महाशक्तियों द्वारा संग्रह करना है।

इन कारणों से ही श्री नेहरु ने 1953 में कहा था कि "अपनी विदेश नीति में हम जो कुछ चाहते हैं उसका सार शांति है। शांति देश में शांति विदेश में। यदि हम शांति को प्राप्त करने के लिए कुछ भी कर सके तो उसे करने का भरसक प्रयत्न करें।

2- गुट निरपेक्षता अथवा असंलग्नता! → भारत के विदेश नीति का प्रमुख सिद्धांत गुट-निरपेक्षता है। सन् 1947 ई० में भारत स्वतंत्र हुआ। इससे पूर्व द्वितीय विश्वयुद्ध हो चुका था जिसने विश्व को दो गुटों में विभाजित कर दिया था - पाश्चिमी गुट तथा साम्यवादी गुट। पाश्चिमी गुट का नेतृत्व अमेरिका कर रहा था तथा साम्यवादी गुट का नेतृत्व रूस। विश्व के अधिकांश देश इन दोनो गुटों में से किसी एक का नेतृत्व स्वीकार कर चुके थे। माओत्सेतुंग ने इस विषय में कहा था कि - "संसार में दो सड़के हैं - एक मास्को की ओर जाती है और दुसरी वाशिंगटन की ओर, तीसरी कोई सड़क नहीं है।" अतः भारत के सम्मुख प्रश्न उठा कि वह किस सड़क पर चले - मास्को की सड़क पर या वाशिंगटन की सड़क पर। स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरु थे। वे स्वतंत्रता प्रेमी थे अतः उन्होंने किसी भी गुट में न रहने का निश्चय किया।

पंचशील के सिद्धांतों का समर्थन: → भारत आज भी पंचशील के सिद्धांतों में हृदय से आस्था रखता है। पंचशील में विभिन्न राष्ट्रों के बीच सद्भावना तथा सद्व्यवहार करने के कुछ नैतिक नियम हैं। इन नियमों का निर्माण हमारे भूतपूर्व प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरु ने किया था।